International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746
Received: 16-06-2021, Accepted: 02-07-2021, Published: 17-07-2021
Volume 6, Issue 4, 2021, Page No. 18-19

माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. पूनम मदान[1], रवि कान्त[2]

[1] प्रधानाचार्या, डॉ. वीरेन्द्र स्वरूप इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेसनल स्टडीज़, किदवई नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्रा, नॉर्थ ईस्ट फ्रन्टियर टेक्निकल विश्वविद्यालय, एलो, वेस्ट साइंग, अरूणाचल प्रदेश, भारत

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है और यह कार्य मनुष्य के जन्म से प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा होता है तो उसे उठने–बैठने, चलने–फिरने, खाने–पीने तथा सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखाई जाने लगती हैं। जब वह तीन–चार वर्ष का होता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में इसकी शिक्षा बड़े सुनियोजित ढंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता रहता है और सीखने–सिखाने का यह काम विद्यालय छोड़ने के बाद भी चलता रहता है और जीवन भर चलता है और विस्तृत रूप से यह प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। अपने वास्तविक अर्थ में किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने–सिखाने की यह सप्रयोजन प्रक्रिया ही शिक्षा है।

मूल शब्दः सुसंस्कृत, सुनियोजित, सप्रयोजन, आध्यात्मिक, संपादित, समुदाय

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक सुसंस्कृत एवं महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके द्वारा मानव अपना सामाजिक एवं आर्थिक विकास करता है और जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। अपने रहन–सहन में परिवर्तन करता है। शिक्षा के द्वारा ही संसार की आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक प्रगति होती है। जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्व है, उसी प्रकार सामाजिक विकास के लिए शिक्षा का महत्व है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो विद्यार्थी के जीवन को संस्कार और विचार प्रदान करती है। संस्कार और विचार की यह प्रक्रिया एक सचेतक और योग्य शिक्षक द्वारा संपादित की जाती है। जन्म के समय तो बच्चा मात्र एक शरीर भर होता है। उस शरीर को मानव बनाने का काम शिक्षा की प्रक्रिया का महत्वपर्ण उपादान है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण साधन है मनुष्य की जन्मजात शक्तियों तथा ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा को परिष्कृत एवं विकसित कर उसे सभ्यए सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाना शिक्षा का मूल योगदान है। शिशु के जन्म के पश्चात् ही माता पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य उसे बोलने तथा माध्यमिक जानकारी देने का कार्य करने लगतें है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार– "शिक्षा का अर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह सत्य की खोज कर सके तथा अपना बनाते हुए उसकों व्यक्त कर सके''।

मात्र भारतीय ही नही वरन् पाश्चात्य दार्शनिक भी शिक्षा को सर्वांगीण विकास का सर्वोत्तम साधन स्वीकार करते है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो का कथन है– "शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य है"। शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है– शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों ही क्रियायें–प्रतिक्रियायें एक दूसरे के उद्देश्यों, भावनाओं आदि के आदान –प्रदान का परिणाम है, 'शिक्षा', शिक्षक अपने ज्ञान, बुद्धि, कल्पना, चिन्तन, तर्क आदि मानसिक, आत्मिक तथा व्यक्तित्व के प्रभाव से विद्यार्थियों में वांछनीय परिवर्तन करता है। यद्यपि शिक्षण प्रक्रिया में इसके अतिरिक्त अन्य तत्व क्रियाशील होते हैं व प्रभाव डालते हैं, लेकिन शिक्षक और छात्र सजीव तत्व होने के कारण अधिक प्रभावशाली हैं।

महत्व

शिक्षा का मूल अधिकार (6 से 14 वर्ष तक निःशुल्क शिक्षा) संविधान में सम्मिलित किया जानाए सर्व शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रमोंए छठवें वेतन आयोग की सिफारिशों को क्रियान्वित किया जाना तथा प्रत्येक वर्ष माध्यमिक शिक्षा हेतु बजट राशि में वृद्धि आदि ऐसे कारण है जिनके फलस्वरूप माध्यमिक शिक्षा में वेतन, बुनियादी सुविधाएँ, भौतिक संसाधन आदि में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। इन सुधारों के परिणामस्वरूप माध्यमिक शिक्षा क्षेत्र अत्यधिक उपयुक्त व्यवसाय के रुप में उत्पन्न हुआ है। किन्तु शिक्षण एक सम्पूर्ण समर्पण वाला कार्य है। इसमें कार्य संतुष्टि के अभाव में शिक्षा के मानदण्डों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। यह एक विचारणीय विषय है कि विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन के पश्चात् भी शिक्षकों में कार्य संतुष्टि का अभाव बना हुआ है। शिक्षक केवल विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए ही नहीं होते वरन् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास भी करते है। परन्तु दुःख की बात तो यह है कि इतना महान कार्य करने वाले माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक आज अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट नहीं है। इससे स्पष्ट है कि भविष्य में हमारे समाज तथा प्रजातांत्रिक देश को भारी कठिनाईयों का सामना पड़ेगा। यदि देश के शिक्षक रूपी शिल्पकार जो देश के भविष्य का निर्माण करते है, उनकी अपने में ही सन्तुष्टि नहीं रह जायेगी तो भविष्य में राष्ट्र का विकास एवं पोषण सम्भव हो पाना कठिन दृष्टिगत होता है।

शिक्षक जब अपनी शिक्षा पूर्ण कर शिक्षा सम्बन्धी व्यावसायिक पाठ्यक्रम करता है तो शिक्षण की अनेक प्रक्रियाओं एवं पद्धतियों से परिचित होता है किन्तु जब वह वास्तविकता के धरातल पर शिक्षक की भूमिका में आता है तो उन पद्धतियोंए प्रक्रियाओं व मौलिकताओं के लिए अधिक स्थान नहीं होता। जिससे वह

हतोत्साहित हो उठता है एवं उसकी सृजनात्मक क्षमताए कौशल आदि नकारात्मक रुप से प्रभावित होते है। जिससे कार्य के प्रति रुचिए उत्साह उत्सुकता आदि का ह्रास होने लगता है जिसका कार्य संतुष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। अतः इस तथ्य का अध्ययन किया जाना अत्यधिक आवश्यक है कि शिक्षकों का कितना वर्ग इससे प्रभावित हो रहा है जिससे उन कारणों का विश्लेषण किया जा सके जो इस कार्य संतुष्टि को प्रभावित कर रहे है।

उद्देश्य

1. शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता (निम्न व उच्च) का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के समायोजन (निम्न व उच्च) का शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शिक्षकों की शैक्षिक योग्यता (निम्न व उच्च) का कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शिक्षकों के समायोजन (निम्न व उच्च) का कार्य सन्तुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

सन्दर्भ

1. कुमार, एस. और वर्मा, कुमार, एन. (2016). कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक–शिक्षा सस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य–सन्तुष्टि के बीस विमाओं का यौन के सन्दर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Education and Research.
2. गहलोत, एस. (2019). उच्च माध्यमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन. चेतना इण्टरनेशनल एजूकेशनल जनरल,पीयर रिवयूड रैफरीड़ जनरल.
3. गिल, (2015). समायोजन सम्बन्धी अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Education and Research .
4. गॉरडन, आर. डी. हॉर्वड, (2017). तकनीकी शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति दक्षता/जागरूकता का अध्ययन. International Journal of Transformation in business management (IJTBM).
5. गुप्ता, वी. (2013). सरकारी एवं निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत।
6. Dey N. Job Satisfaction, Mental Health and Teachers Attitude towards the Children. Indian Journal of Educational Research, 2008.
7. Goyat A. A study of adjustment level among primary school teachers in Jhajjar District. International Journal of Transformations in Business Management, 2012, 1(6).
8. Kochar GK, Khetarpal A. A study of Stress, Job satisfaction and Locus of Control in permanent and temporary college teacher. Journal of All Indian Association for Educational Research, 2006.
9. Musthafa MA, Noushad PP. Influence of locus of control on the academic achievement of pre-service teachers, M.E.R.I., Bhilai. Modern Educational Research in India, Suvidhya Prakashan, Bhilai, 2009, 3(3).